AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

क्षेत्रीय ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षणः हमारा दायित्व

डॉ. शैलेन्द्र पाठक,
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय
पिछोर, जिला शिवपुरी,
मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

हमारे देश में जिन प्राचीन स्मारको को देखने सराहने विश्व के विभिन्न देशो के लोग आते हैं, परन्तु उन प्राचीन धरोहरो के प्रति हमारी उदासीनता उनके अस्तित्व के लिए आज बहुत बड़ा खतरा है। अगर ऐसा ही रहा और तो इन एतिहासिक धरोहरो का अस्तित्व इतिहास के पन्नो में सिमट कर रह जाऐगा। अभी भी समय है हमारी सांस्कृतिकता, ऐतिहासिकता, कलात्मकता अभी भी अपशिष्ट है, यदि हम इनको भी संरक्षित कर सके तो आने वाली पीढ़िया हमारी कृतज्ञ रहेंगी।

मुख्य शब्द

धरोहर, संरक्षण, ऐतिहासिक, कलात्मक।

स्वतंत्रता प्राप्ति के करीब चार दशक बाद शैक्षणिक तकनीकी, आर्थिक प्रचार–प्रसार के उन्नयन का ही परिणाम है कि लोगों ने अपनी संस्कृति अपनी धरोहरों को निहारना प्रारम्भ किया।

भारत सरकार ने पहली बार राष्ट्रीय संस्कृति नीति घोषित कर कला संस्कृति को स्कूलों के पाठ्यक्रमों से जोड़ा गया जिससे भारतीय क्षेत्रीय, ग्रामीण कला, लोक कला, आदिवासी कला का पुनरुद्धार हुआ। साथ ही कला बाजार, प्रदर्शनियां आयोजित की गई व समाचार पत्रों व पत्रिकाओं के द्वारा विदेशी पर्यटकों ने भारत आकर हमारे स्मारकों के असाधारण सौंदर्य के प्रति हमारा ध्यान आकर्षित कराया। भारत के विभिन्न प्रान्तों में वहां के क्षेत्रीय इतिहास को अपने में संजोये बैठी कई पुरातात्विक स्मारक या इमारतें मौजूद हैं जो विदेशों में भारत की एक अद्वितीय छवि को प्रदर्शित करती है ।

परन्तु आज ये विश्व महत्व के स्मारक अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं, जैसे ताजमहल काला पड़ रहा है, अजन्ता की गुफाओं के चित्र धूमिल होते जा रहे हैं, खजुराहो के मन्दिरों के पत्थर खोखले होने लगे हैं, पन्ना की पाण्डव गुफाओं में दरारें, उज्जैन के महाकाल शिवलिंग का क्षरण, मन्दसौर के पशुपतिनाथ शिवलिंग का क्षरण व मध्यप्रदेश के कई क्षेत्रीय किलों व महलों के शिखर गिर कर चूर–चूर हो गये हैं। इन अद्वितीय स्मारकों को हमारे पूर्वजों ने अपनी साधना, अपनी अदम्य निष्ठा, अपने कला प्रेम के कारण उन दिनों बनवाया था, जब न आज जैसी वैज्ञानिक प्रगति थी न यातायात न निर्माण प्रक्रिया की आज जैसी सुविधायें। आज हम अपनी विरासत को सहेज नहीं पा रहे हैं, उन्हें आगे बढ़ाना तो दूर की बात है। लकड़ी, मिट्टी तथा नाजुक चीजों से बनी इमारतें एवं राजप्रसाद तो जाने कहाँ विलीन हो गये, पर ईंटों तथा पत्थरों के किले और मदरसे, मजार और समाधियाँ, अशोक का दतिया के गुर्जरा में स्थित स्तम्भ, साँची के स्तूप जो आज बच सके हैं, उनकी हालत बहुत खराब है ।

मूल प्रश्न है कि जब देश की कुछ जनसंख्या गरीबी और भुखमरी में सिसक रही है, तो किसे ख्याल रहता है गूजरी

महल का या ग्वालियर के किले का। यह सच है, परन्तु इससे भी बड़ा सच यह है कि पहले भारत गरीब नहीं था सोने की चिड़िया था और आने वाले कल का भारत भी गरीब नहीं होगा। पर उस गौरवमय भविष्य तक पहुंचने से पहले ही यदि हमारे पुरातात्विक मन्दिर जैसेः मन्दसौर का पशुपतिनाथ मन्दिर, दतिया का महल, माण्डू के स्मारक ढह जायें, तो कौन सी वैज्ञानिक तकनीक उन्हें वापिस दिलवा पायेगी? इसलिए इन ऐतिहासिक इमारतों की रक्षा करना हमारा कर्तव्य भी है और हमारी आनिवार्यता भी है। ये हमारे धर्म, कला, इतिहास संस्कृति के प्रतिमान हैं, जो विश्व पटल पर भारत को अलग पहचान देते हैं।

हमारी इन धरोंहरों के निरन्तर ह्रास के कारणों में मुख्य कारण है पत्थरों की सरंचना, प्रत्येक प्रकार के पत्थरों के अपने गुण दोष होते हैं। मध्यप्रदेश की विभिन्न इमारतें खोण्डलाइट पत्थरों से बनी हैं, जिसमें कैल्सिटिक नामक एक तत्व पाया जाता है जो पत्थरों को जोड़ने में सहायक होता है। वायुमण्डल में पाये जाने वाली कार्बन डाइ ऑक्साइड के कारण यह तत्व इमारतों में घुलनशील हो गया, फलस्वरूप वहां के पत्थरों के जोड़ ढीले पड़ गये और पत्थर खिसकने लगे हैं ।

दूसरा कारण है पर्यावरण, अधिकांश स्मारक खुली जगह पर हैं। चटकती धूप, बरसता पानी, ठिठुरती ठंड इन सभी का विपरीत प्रभाव इन स्मारकों पर पड़ता है, इन पर हमारा नियंत्रण भी नहीं है। इन कारणों से पत्थरों पर सूक्ष्म जीवाणु पैदा हो जाते हैं जो पत्थरों पर काले हरे धब्बे पैदा कर उन्हें बदरंग कर देते हैं। कुछ बैक्टीरिया गंधक पैदा करते हैं, मन्दसौर के पशुपतिनाथ शिवलिंग के क्षरण का कारण जिप्सम है ।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण संस्थान सम्पूर्ण भारत में बिखरे स्मारकों के रख–रखाव संरक्षण एवं उन्हें पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बनाने पर विशेष ध्यान दे रहा है। स्मारकों के आसपास जंगली घास, खरवतवार को साफ कर चारों ओर हरियाली एवं पार्क विकसित करना, उन्हें शहर के मुख्य राजमार्गों से जोड़ना इस संस्था का प्रमुख दायित्व है। यदि स्मारक उपेक्षित पड़े रहेंगे तो वे निश्चित ही क्षीण हो जायेंगे। यदि वहां आवागमन, कलात्मक वस्तुओं का विक्रय व सांस्कृतिक लोकप्रिय कार्यक्रम किये जायें तो ये स्मारक हमारी आय के अच्छे साधन भी सकते हैं। ग्वालियर में मनाया जाने वाला तानसेन समारोह, खजुराहो में मनाया जाने वाला नृत्य समारोह ये सभी इन स्मारकों के बहु आयामी उपयोग की ओर इशारा करते हैं ।

पुरातत्व विभाग भी अनेकों स्मारकों का रखरखाव करता है, परन्तु अभी भी क्षेत्रीय स्तर पर हजारों छोटे–बड़े स्मारक बिखरे पड़े हैं जिन्हें राजकीय पुरातत्व धरोहर माना गया है। उनकी सुरक्षा के लिए न चौकीदार हैं न उनके संरक्षण के लिए धन व अन्य साधन।

अधिक अच्छा हो कि समाज के धनी एवं प्रतिष्ठित लोग एक–एक स्मारक को गोद ले लें और संतानवत् उनका संरक्षण करें। यह काम पंचायतों, स्वयंसेवी संस्थानों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भी सौंपा जा सकता है। स्मारकों के संवर्धन में आने वाला व्यय के बदले उन्हें वहां पर प्रवेश शुल्क लगाने एवं अपना प्रचार–प्रसार करने की छूट दी जा सकती है। स्मारकों के आस–पास निर्माण रोका जाना अति आवश्यक है, इस पर शक्ति से नियंत्रण होना चाहिए। स्मारकों के संरक्षण में हमारे पुरातत्व वेत्ताओं ने सराहनीय कार्य किये हैं, यही कारण है कि यूनेस्को ने विदेशों में स्थित विश्व विरासत के संरक्षण का कार्य हम भारतीय पुरातत्वविदों को सौंपा है।

परन्तु आज हम क्या कर रहे हैं, स्मारकों में खरोंच लगाना, अपना नाम खोद देना, गंदगी फैलाना और न जाने क्या क्या नुकसान पहुंचाते रहते हैं। स्मारकों की मूर्तियां, यहां के लेख व सुसज्जित फलक निकाल लिए जाते हैं और उन्हें विदेश भेज दिया जाता है। मध्यप्रदेश में स्थित भरहूत का दो हजार साल पुराना स्तूप पानी के जहाज से लंदन ले जाया गया था परन्तु वह जहाज समुद्र में डूब गया साथ ही स्तूप भी। यह बात दूसरी है कि स्तूप लंदन पहुंचा कि नहीं परन्तु भारतीय संस्कृति को तो नुकसान ही हुआ।

निष्कर्ष

जिन पुरातात्विक महत्व की इमारतों व स्मारकों को देखने विश्व के विभिन्न देशों के लोग भारत आते हैं उन स्मारकों के प्रति हमारी उदासीनता उन के अस्तित्व के लिए खतरा हैं। अगर ऐसा ही रहा और इस ओर हमारा ध्यान नहीं गया तो इनका अस्तित्व इतिहास के पन्नों में ही सिमट कर रह जायेगा। सांस्कृतिकता, ऐतिहासिकता, कलात्मकता अभी भी अवशिष्ट है यदि हम उसको भी संरक्षित कर सकें तो आने वाली पीढ़ियाँ हमारी कृतज्ञ रहेंगी।

सन्दर्भ सूची

1. कौर, ई.एच., *What is history,* पृष्ठ 14।
2. वायु पुराण, अध्याय 5।
3. सिंह भगवान, हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य।
4. जयसवाल अनुज, के शोघ प्रपत्र।
5. श्रीवास्तव के. सी., प्राचीन भारत।
6. अहमद लईक, मघ्यकालीन स्थापत्य।

——==00==——